साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 5 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 28 जनवरी 2026 से 3 फरवरी 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

गणतंत्र दिवस-2026 का आयोजन सिंहस्थ-2028 के दृष्टिगत ही किया गया पावन शिप्रा के किनारे

भोपाल प्रदेश में 77वां गणतंत्र दिवस धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन के कार्तिक मेला ग्राउंड में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और परेड की सलामी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और लोकतंत्र रक्षकों का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत और सिंहस्थ पर केंद्रित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आकर्षक प्रस्तुतियां भी हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों, समारोह में प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विभागीय झांकियों को पुरस्कृत भी किया। समारोह में मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती सीमा यादव, सांसद श्री अनिल फिरोजिया, राज्यसभा सांसद श्री बालयोगी उमेशनाथ जी महाराज, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, महापौर श्री मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, विभिन्न धर्मो के धर्मगुरू, जनप्रतिनिधि, अधिकारी, छात्र-छात्राएं और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्तिक मेला मैदान स्थित शिप्रा तट सुनहरी घाट पर तिरंगा कलर के गुब्बारे खुले आकाश में छोड़ कर राष्ट्रभक्ति और जनसेवा का संदेश दिया। इस अवसर पर मां शिप्रा में 40 से अधिक तिरंगे रंग से सरावोर नाव पर तिरंगा ध्वज लिए होमगार्ड, एसडीईआरएफ के जवान उपस्थित होकर देश भक्ति के गीत गा रहे थे। घाट पर तिरंगे की थीम पर साज-सज्जा की गई साथ ही घाट पर जनजातीय भील कलाकारों द्वारा भगोरिया नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गणतंत्र दिवस के मंगल अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रदेश की जनता के नाम संदेश दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज राष्ट्र के जन-गण-मन में देशभक्ति और देश के लिए गर्व का भाव सशक्त हो रहा है।

नोएडा में तकनीकी कर्मचारी की डूबने से मौत पर एनजीटी ने लिया स्वत-संज्ञान

नोएडा सेक्टर 150 में एक तकनीकी कर्मचारी की डूबने से हुई मौत के मामले में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने स्वत- संज्ञान लिया है। इस मामले ने सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही नहीं बल्कि शहरी जल प्रबंधन की गंभीर विफलताओं को भी उजागर किया है।

एनजीटी की प्रधान पीठ में जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव और विशेषज्ञ सदस्य डॉ. ए. सेंटिल वेल ने 20 जनवरी 2026 को एक अंग्रेजी समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार रिपोर्ट के आधार पर यह संज्ञान लिया है। एनजीटी ने तथ्यों पर गौर करते हुए पाया कि पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर युवराज मेहता नोएडा के सेक्टर 150 क्षेत्र में जिस जलभराव वाले गड्ढे (वॉटरलॉग्ड ट्रेंच) में डूबे, यह क्षेत्र बीते लगभग एक दशक से बारिश के पानी और आसपास के आवासीय इलाकों से निकासी न होने के कारण एक स्थायी जलाशय या तालाब में तब्दील हो चुका था। इसके बावजूद न तो इसे सुरक्षित किया गया और न ही प्रभावी जल निकासी की व्यवस्था की गई। वहीं, समाचार के मुताबिक, जांच में यह भी पता चला कि वर्ष 2015 में सिंचाई विभाग द्वारा इस क्षेत्र के लिए एक स्टॉर्म वाटर मैनेजमेंट योजना प्रस्तावित की गई थी, जिसमें हेड रेगुलेटर की स्थापना शामिल थी ताकि अतिरिक्त पानी की नियंत्रित निकासी सुनिश्चित की जा सके। हालांकि, इस योजना को लागू करने में वर्षों की देरी हुई, जिसके चलते क्षेत्र में गंभीर जलभराव की स्थिति बनी रही। यही जलभराव अंतत: एक जानलेवा हादसे का कारण बना। एनजीटी ने इस मामले को पर्यावरणीय सुरक्षा, शहरी नियोजन और नागरिक सुरक्षा से जुड़ा गंभीर विषय मानते हुए कई प्रमुख सरकारी एजेंसियों को पक्षकार बनाया है। इनमें नोएडा प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी), सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यावरण विभाग के मुख्य सचिव तथा गौतम बुद्ध नगर के जिला मजिस्ट्रेट

शामिल हैं। ट्रिब्यूनल ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वह मामले में अपना विस्तृत जवाब अगली सुनवाई से कम से कम एक सप्ताह पहले दायर करें। इस मामले की अगली सुनवाई 10 अप्रैल 2026 को निर्धारित की गई है। नोएडा में घटी यह दर्दनाक घटना तेजी से शहरीकरण कर रहे शहरों में कमजोर जल निकासी व्यवस्था, अधूरी परियोजनाओं और विभागीय समन्वय की कमी का प्रतीक भी है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते स्टॉर्म वाटर मैनेजमेंट योजनाओं को लागू किया गया होता और जलभराव वाले क्षेत्रों की नियमित निगरानी की जाती तो इस तरह की दुर्घटनाओं को रोका जा सकता था।

जलवायु परिवर्तन के कारण गर्म होते समुद्र के हिसाब से खुद को ढाल रही हैं व्हेलें

मुंबई। समुद्रों में हो रहे बदलाव और जलवायु परिवर्तन ने हमारी समुद्री दुनिया को तेजी से बदल दिया है। उत्तरी अटलांटिक महासागर में रहने वाली व्हेल मछलियां भी इन बदलावों से अछूती नहीं हैं। हाल ही में वैज्ञानिकों ने लगभग 30 वर्षों के आंकड़ों का अध्ययन करके यह पता लगाया है कि कैसे ये विशाल जीव अपने पर्यावरण के साथ तालमेल बिठा रहे हैं और नई परिस्थितियों में खुद को ढाल रहे हैं।

कनाडा की केसेंट लॉरेंस की खाड़ी (जीएसएल) में तीन प्रकार की व्हेल मछलियों - फिन व्हेल, हम्पबैक व्हेल और मिन्की व्हेल के आहार और जीवनशैली का अध्ययन किया गया। यह क्षेत्र उनके लिए मौसमी भोजन का मुख्य केंद्र है। अध्ययन में वैज्ञानिकों ने 1,000 से अधिक त्वचा के नमूने एकत्र किए। इन नमूनों को तीन अलग-अलग समय के अंतराल में लिया गया जिनमें 1992-2000, 2001-2010, 2011-2019 शामिल रहे। इन सालों में जलवायु और पर्यावरण में बदलाव जैसे कि समुद्र का तापमान बढ़ना और बर्फ का पिघलना देखा गया। वैज्ञानिकों ने पाया कि इन वर्षों में व्हेल मछलियों का भोजन धीरे-धीरे बदल रहा है। यह बदलाव मुख्य रूप से भोजन की कमी और नई उपलब्धता के कारण हुआ। फिन व्हेल 1990 के दशक में मुख्य रूप से क्रिल खाते थे। 2000 के दशक में उन्होंने कैपेलिन, हेरिंग और मैकेरल जैसी मछलियां खाना शुरू किया। 2010 के दशक में उनका आहार सैंड लांस और नॉर्दर्न क्रिल की तरफ झुक गया। बदलते पर्यावरण का प्रभाव समुद्र का तापमान बढ़ना और बर्फ पिघलना सेंट लॉरेंस की खाड़ी में व्हेलों के भोजन की उपलब्धता और संरचना को प्रभावित कर रहा है। मिन्की व्हेल मुख्य रूप से पैलेजिक मछलियों पर निर्भर रही, लेकिन बाद में क्रिल का सेवन बढ़ा। बदलते पर्यावरण का प्रभाव समुद्र का तापमान बढ़ना और बर्फ पिघलना सेंट लॉरेंस की खाड़ी में व्हेलों के भोजन की उपलब्धता और संरचना को प्रभावित कर रहा है। वैज्ञानिकों ने यह भी देखा कि इन व्हेलों ने खाद्य और जगह को साझा करने की कला सीख ली है। इसे संसाधनों को साझा करना कहते हैं। इसका मतलब है कि अलग-अलग प्रजातियां अपने भोजन और रहने की जगह को बांटकर आपस में प्रतियोगिता को कम करती हैं। पहले जहां एक ही क्षेत्र में सभी व्हेल एक ही भोजन की ओर आकर्षित होती थीं, अब उन्होंने अपने खाने का समय, स्थान और प्रकार बदल लिया है। इससे सभी प्रजातियां सुरक्षित रूप से एक साथ रह सकती हैं। केवल भोजन बदलना ही नहीं, कुछ व्हेलों ने नई शिकार तकनीकें भी सीख ली हैं। हम्पबैक व्हेल की सबसे रोचक तकनीक है बबल-नेट फीडिंग। इसमें व्हेल्स समूह में मिलकर पानी में बुलबुले छोड़ती हैं। बुलबुले छोटी मछलियों को घेर लेते हैं और मछलियां एक जगह इकट्ठा हो जाती हैं। इसके बाद व्हेल आसानी से उन्हें खा लेती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार यह केवल शिकार की तकनीक नहीं है, बल्कि एक साझा ज्ञान और संस्कृति का हिस्सा है। इससे पूरे व्हेल समुदाय की बचे रहने और मजबूत होने की संभावना बढ़ जाती है। फ्रंटियर्स इन मरीन साइंस में प्रकाशित यह अध्ययन हमें यह सिखाता है कि व्हेलें जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों के बावजूद अपने आप को ढाल सकती हैं। उनका व्यवहार, भोजन और सामाजिक रणनीतियां यह दर्शाती हैं कि प्राकृतिक दुनिया में जीव अद्भुत अनुकूलन क्षमता रखते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि हमें जानवरों की संस्कृति और व्यवहार को समुद्री प्रबंधन में शामिल करना चाहिए। जैसे-जैसे मानवजनित गतिविधियां बढ़ेंगी, यह समझना जरूरी होगा कि समुद्री जीव कैसे प्रतिक्रिया देते हैं और उनका संरक्षण कैसे किया जा सकता है। सेंट लॉरेंस की खाड़ी में रहने वाली फिन, मिन्की और हम्पबैक व्हेल ने यह साबित कर दिया है कि प्रकृति में जीवन जीने की कला सिर्फ जीवित रहने में नहीं, बल्कि सीखने और साझा करने में भी है। ये विशाल समुद्री जीव अपने आहार और सामाजिक व्यवहार को बदलकर नई परिस्थितियों के अनुकूल हो रहे हैं। यही सीख हमें यह समझाती है कि पर्यावरण संरक्षण केवल हमारे लिए ही नहीं, बल्कि समुद्र के विशाल जीवन के लिए भी जरूरी है।

वन्दे मातरम चौक पर स्थापित भारत माता की प्रतिमा का अद्भुत सौन्दर्य नागरिकों को प्रेरित करेगा -उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत शहर की स्वच्छता, सौंदर्यीकरण एवं नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में नगर निगम सागर द्वारा निरंतर नवाचार किए जा रहे हैं। इसी क्रम में गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर अंबेडकर वार्ड में निर्मित वंदे मातरम चौक का लोकार्पण और भारत माता की प्रतिमा का अनावरण उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल द्वारा किया गया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बहुत ही सुंदर प्रतिमा है। स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं बल्कि नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है। सागर शहर के वन्दे मातरम चौक पर स्थापित भारत माता की प्रतिमा का अद्भुत सौन्दर्य नागरिकों को स्वच्छता और राष्ट्र प्रेम के प्रति प्रेरित करेगा। स्वच्छ सर्वेक्षण के माध्यम से शहरों में प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ नवाचार और सौंदर्यीकरण को बढ़ावा मिल रहा है। वंदेमातरम चौक जैसे कार्य न केवल शहर की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि नागरिकों में देशभक्ति और स्वच्छता के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न करते हैं। उन्होंने नगर निगम द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सागर शहर स्वच्छता के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है।

लोकरंग, हमारी माटी की सुगंध और सांस्कृतिक विरासत का अनुपम स्वरूप -राज्यपाल श्री पटेल

लोकरंग, विरासत से विकास की यात्रा का पड़ाव -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह के विजेताओं को किया पुरस्कृत

लोकरंग महोत्सव में दिए गए राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मान

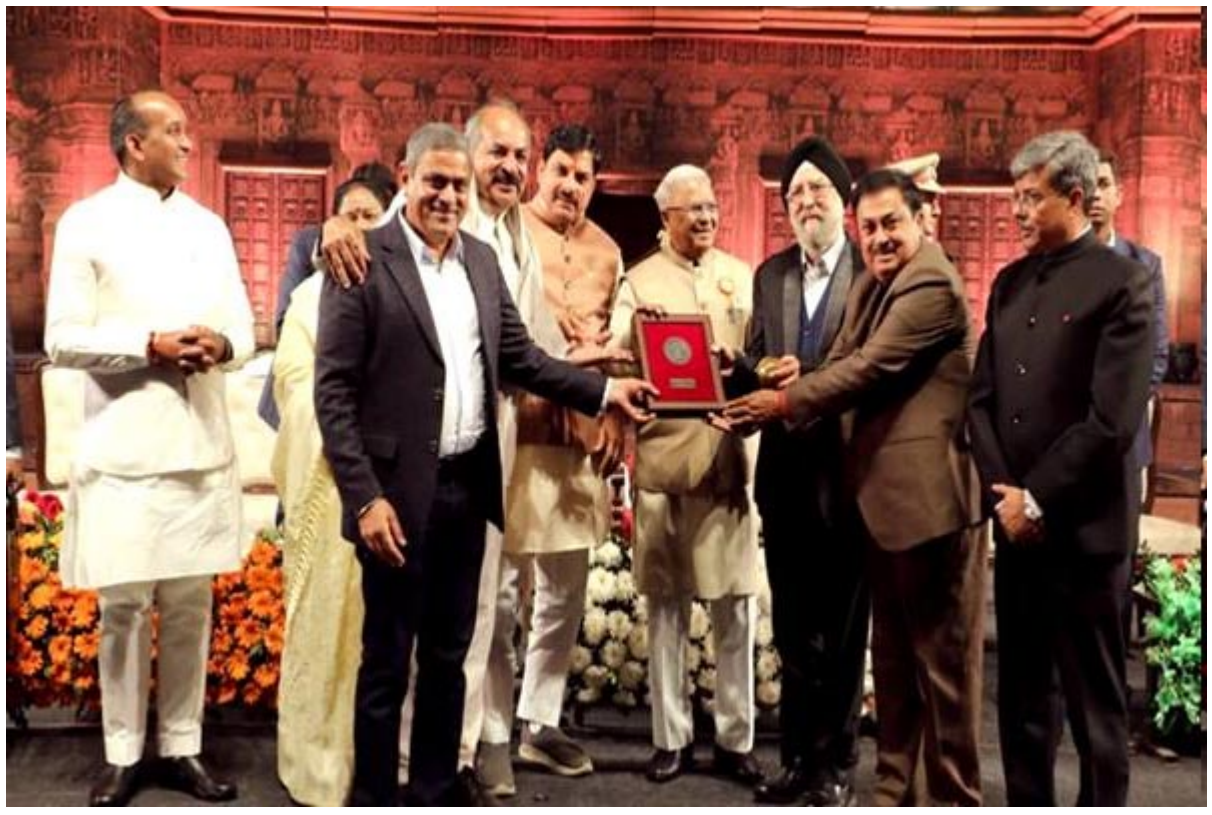

भोपाल राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि लोकरंग हमारी माटी की सुगंध, लोकजीवन की धड़कन और सदियों से प्रवाहित सांस्कृतिक विरासत का अनुपम एवं जीवंत स्वरूप है। यह महोत्सव, हमारी महान परंपराओं के साथ उज्ज्वल भविष्य का मार्गदर्शक पुंज हैं। उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस के साथ लोकरंग महोत्सव का शुभारंभ, राष्ट्रीय समारोह को और भी अधिक अर्थपूर्ण बनाने की सार्थक पहल है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि 'लोकरंग' की पहल हम सभी के जीवन में समरसता, प्रेम और गहन राष्ट्र-भावना को और प्रबल करने की प्रेरणा देती रहे, मेरी मंगलकामनाएं है। राज्यपाल श्री पटेल गणतंत्र दिवस की संध्या पर रवींद्र भवन परिसर भोपाल में आयोजित लोकरंग समारोह को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार की शाम रवीन्द्र भवन स्थित परिसर में बहिरंग मंच पर पांच दिवसीय लोकरंग का शुभारंभ किया। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर संत सिंगाजी के जीवन और योगदान पर केंद्रित प्रभावशाली नृत्य नाट्य प्रस्तुति खेती खेड़ो हरि नाम की का आनंद भी लिया। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित जन को गणतंत्र दिवस की बधाई और सभी विजेताओं को शुभकामनाएं दी। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकरंग महोत्सव में गणतंत्र दिवस के राज्य स्तरीय समारोह में शामिल हुए सैन्य दल, असैन्य दल, सांस्कृतिक दल और झांकी के विजेताओं को पुरस्कृत किया। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि हमारा लोक, हमारी संस्कृति और हमारे अन्नदाता किसान, एक-दूसरे के पूरक है। प्रदेश और देश के सर्वांगीण विकास की मुख्य आधारशिला है। जब हमारा किसान समृद्ध और खुशहाल होगा, तभी हमारी लोक-संस्कृति और कलाएं सही मायने में पुष्पित और पल्लवित होंगी। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को %किसान कल्याण वर्ष% के रूप में मनाने की पहल की सराहना की। प्रदेश सरकार की इस पहल को अन्न दाताओं के सम्मान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति संवेदनशीलता की परिचायक बताया। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम के पूर्व प्रदेश की विभिन्न संस्कृतियों के बर्तनों की प्रदर्शनी बासन का अवलोकन कर सराहना की।

विरासत से विकास की यात्रा और मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में देश में विरासत से विकास की यात्रा चल रही है। आज लोकरंग में हो रहे कार्यक्रम भी इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। संस्कृति विभाग ने उत्कृष्ट आयोजनों का संयोजन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत ने काल के प्रवाह में अपनी कमियों का साक्षी बनकर अपनी खूबियों से विशेष पहचान बनाई। आज भारत दुनिया के सामने महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुंच गया है। केंद्र और राज्य सरकार ने किसानों के कल्याण के भरसक प्रयास किए हैं। मध्यप्रदेश सरकार वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। लोकरंग में पहली बार कृषि और किसान कल्याण गतिविधियां भी संपन्न हो रही हैं। दो पहिये वाहन से दुग्ध और सब्जी एवं अन्य सामग्री प्रदाय करने वाले युवाओं को जीवन रक्षा के लिए हेलमेट भी प्रदान किए गए हैं। करीब 2 हजार युवाओं को यह सुविधा प्रदान की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस पहल की प्रशंसा की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महात्मा गांधी के शब्दों में सच्चा भारत गांवों में बसता है और ग्रामीण व्यवस्था, कृषि आधारित व्यवस्था, ग्रामों का विकास भारत का विकास है। आज के बदलते दौर में प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में जब बहुत सारे देशों ने विभिन्न प्रकार से भारत की आर्थिक व्यवस्था में अलग से एजेंडा चलाने का प्रयास किया, तब प्रधानमंत्री ने डटकर मुकाबला करते हुए कृषि और किसानों के हितों से कोई समझोता नहीं किया। यह प्रसन्नता की बात है कि झांकी का पहला पुरस्कार कृषि विभाग को दिया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बासन प्रदर्शनी की भी प्रशंसा की।

मिनी इंडिया - मिनी मध्यप्रदेश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकरंग कलाकारों, शिल्पकारों, लोकसाधकों का लघु मेला है। सभी कलाकार पूरे वर्ष इसकी प्रतिक्षा करते हैं। भोपाल सहित प्रदेशवासियों को इसकी प्रतिक्षा रहती है। वास्तव में यह मिनी इंडिया की तर्ज पर मिनी मध्यप्रदेश बन गया है। अलग-अलग क्षेत्र से अपनी-अपनी कलाओं के बलबूते पर अपनी लोक संस्कृति को गौरवान्वित करते हुए इस कार्यक्रम का हिस्सा बनते हैं तो यह अलग प्रकार का आनंद देता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कलाकार अपनी लोकवाद्य और लोकसंस्कृति के साथ झूम-झूम कर आनंद के साथ अतिथियों का स्वागत करते हैं। यह हमारे देश की गौरवशाली विरासत भी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश की चार विभूतियों को पद्म पुरस्कार दिए जाने के लिए बधाई दी और इसे प्रदेश के लिए गौरव का क्षण बताया। पद्मश्री के लिए चुनी गई प्रदेश की चार विभूतियों का अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में वर्ष 2024 और 2025 के लिए राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मान से सम्मानित हुई दोनों संस्थाओं, सेवा भारती आनंद धाम भोपाल और पुनुरुथान समरसता गुरुकुलम पुणे के पदाधिकारियों को बधाई दी। इन संस्थाओं को गांधी विचार दर्शन के अनुरूप कार्य करने के लिए इस प्रतिष्ठित सम्मान में बीस लाख रुपए की सम्मान राशि और सम्मान पट्टिका भेंट की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संस्कृति विभाग को उत्कृष्ट आयोजन के लिए बधाई दी।

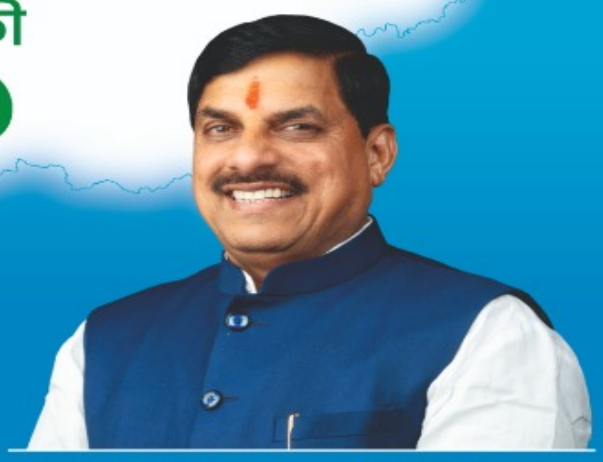

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008